ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, कृषि मौसम विभाग
जलवायु परिवर्तन पर उच्च अध्ययन केन्द्र
डा0 राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय
पूसा,समस्तीपुर (बिहार)–848125

बुलेटिन संख्या–62
दिनांक– मंगलवार, 19 अगस्त, 2025

विगत मौसम पूर्वानुमान अवधि का आकलन

मौसमीय वेधशाला पूसा के आकलन के अनुसार पिछले तीन दिनों का औसत अधिकतम एवं न्यूनतम तापमान क्रमशः 34.0 एवं 26.0 डिग्री सेल्सियस रहा। औसत सापेक्ष आर्द्रता 91 प्रतिशत सुबह में एवं दोपहर में 79 प्रतिशत, हवा की औसत गति 8.0 कि0मी0 प्रति घंटा एवं दैनिक वाष्पन 3.8 मि0मी0 तथा सूर्य प्रकाश अवधि औसतन 7.2 घन्टा प्रति दिन रिकार्ड किया गया तथा 5 से0मी0 की गहराई पर भूमि का औसत तापमान सुबह में 30.3 एवं दोपहर में 36.5 डिग्री सेल्सियस रिकार्ड किया गया। इस अवधि में 6.0 मि0मी0 वर्षा हुई।

मध्यावधि मौसम पूर्वानुमान
(20–24 अगस्त, 2025)

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, डा0आर0पी0सी0ए0यू0, पूसा, समस्तीपुर एवं भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से जारी 20–24 अगस्त, 2025 तक के मौसम पूर्वानुमान के अनुसारः–

- पूर्वानुमान की अवधि में उत्तर बिहार के जिलो में आसमान में मध्यम से घने बादल छा सकते हैं। अगले 24 घंटो में अनेक स्थानों पर हलकी वर्षा होने का अनुमान है। **22–23 अगस्त को उत्तर बिहार के जिलों में अधिकांश स्थानों पर मध्यम से भारी वर्षा हो सकती है, कुछ स्थानों पर बिजली और गरज के साथ वर्षा हो सकती है।**
- इस अवधि में अधिकतम तापमान 33–35 डिग्री सेल्सियस के बीच रह सकता है। न्यूनतम तापमान 27–29 डिग्री सेल्सियस के आस–पास रह सकता है।
- सापेक्ष आर्द्रता सुबह में 90 प्रतिशत के आसपास तथा दोपहर में 40 से 45 प्रतिशत रहने की संभावना है।
- पूर्वानुमानित अवधि में 20 अगस्त को औसतन 10 से 15 कि0मी0 प्रति घंटा की रफ्तार से पूर्वा हवा चल सकती है, अन्य दिनो में पछिया हवा चलने की संभावना है।

• समसामयिक सुझाव

- धान की 30–35 दिनों की फसल में प्रति हेक्टेयर 30 किलोग्राम नेत्रजन का उपरिवेशन करें। अगात धान की फसल में खैरा बीमारी दिखाई पड़ने पर खेतों में जिंक सल्फेट 5.0 किलोग्राम तथा 2.5 किलोग्राम बुझा चूना का 500 लीटर पानी में घोल बना कर एक हेक्टेयर में छिड़काव आसमान साफ रहने पर करें। पिछात रोपी गई धान की फसल में खरपतवार नियंत्रण के कार्य को प्राथमिकता दें।
- सितम्बर अरहर की बुआई के लिए खेत की तैयारी करे। किसान भाई 25 अगस्त के बाद इसकी बुआई कर सकते हैं। बुआई के समय प्रति हेक्टेयर 20 किलोग्राम नेत्रजन, 45 किलोग्राम स्फुर,20 किलोग्राम पोटाष तथा 20 किलोग्राम सल्फर का व्यवहार करें। अरहर की पूसा–9 तथा शरद प्रभेद उत्तर बिहार के लिए अनुसंशित है। बुआई के 24 घंटे पूर्व 2.5 ग्राम थीरम दवा से प्रति किलोग्राम बीज की दर से उपचार करे। बुआई के ठीक पहले उपचारित बीज को उचित राईजोबियम कल्चर से उपचारित कर बुआई करनी चाहिए।
- मक्का की खड़ी फसल में तना छेदक कीट की निगरानी करें। यह कीट फसल को काफी नुकसान करता है। इस कीट की सूंडियाँ पहले कोमल पत्तियों को खाती है तथा मध्य कलिका की पत्तियों के बीच घुसकर उन्ही से होते हुए तने में पहुच जाती है एवं तने के गूदे को खाती हुई जड़ की तरफ बढ़ती हुई सुरंग बनाती है। फलतः मध्य कलिका मुरझाकर सुखी हुई नजर आती है एवं इसे अगर पकड़कर खींचा जाए तो वह आसानी से बाहर निकल आती है। इस प्रकार का लक्षण दिखने पर कार्बोफ्यूरान (3 जी) का 7 किलोग्राम/हे0 की दर से पौधें के गाभा में डालें।
- खरीफ प्याज की रोपाई के लिए खेतो को समतल कर छोटी–छोटी उथली क्यारियाँ बनावें, जिसकी चौड़ाई 2 मीटर एवं लम्बाई 3 से 5 मीटर तक रख सकते हैं। प्रत्येक दो क्यारियो के बीच जल निकास हेतु नालियाँ अवष्य बनावें। पाँक्ति से पाँक्ति की दुरी 15 से0मी0, पौध से पौध की दुरी 10 से0मी0 पर रोपाई करें। मिर्च की नर्सरी गिराने का कार्य अविलंब संपन्न करें। जिनका पौध तैयार हो वे किसान रोपनी करें। रोपाई पूर्व जीवाणु खाद से विचड़ों का उपचार अवश्य करें।
- सब्जियों की नर्सरी में लाही, सफेद मक्खी व चूसक कीड़ों की निगरानी करें। ये कीट विषाणु जनित रोग के लिए वाहक का काम करते है। इससे बचाव के लिए इमिडाक्लोरोप्रिड दवा का 0.3 मी.ली. प्रति लीटर पानी की दर से घोल कर छिड़काव करें।
- जो किसान भाई फलदार पौधों का बगीचा लगाना चाहते हैं वे अविलम्ब पौधों की रोपाई कर लें। रोपाई के पहले, प्रति गड्ढ़ा 40 से 50 किलोग्राम सड़ी गोबर का प्रयोग करें।
- परवल की राजेंद्र परवल–1, राजेंद्र परवल–2, राजेंद्र परवल–3, स्वर्ण रेखा और स्वर्ण अलौकिक किस्मों की रोपनी करें। बीज दर 2500 गुच्छियाँ प्रति हेक्टेयर तथा लगाने की दूरी 2 × 2 मीटर रखें। परवल की रोपाई के लिए प्रति गड्ढ़ा कम्पोस्ट 3 से 5 किलो ग्राम, नीम या अंडी की खल्ली 250 ग्राम, एस0एस0पी0 100 ग्राम, म्यूरेट ऑफ पोटाश 25 ग्राम एवं थिमेट 10 से 15 ग्राम का व्यवहार करें। परवल के अच्छे फलन के लिए 5 प्रतिशत नर पौधे की रोपाई अवश्य करें।
- फूलगोभी की मध्यकालीन किस्में अगहनी, पूसी, पटना मेन, पूसा सिन्थेटिक–1, पूसा शुभ्रा, पूसा शरद, पूसा मेघना, काशी कुवॉरी एवं अर्ली स्नोबॉल किस्मों की बुआई नर्सरी में करें। उपचारित बीज उथली क्यारियों मे पंक्तियों में गिराये।
- पपीता की नर्सरी उथली क्यारियों (10–15 सेन्टी मीटर ऊँची) में बोयें। इसके लिए उन्नत प्रभेद पूसा ड्वार्फ, पूसा नन्हा, पूसा डीलीसीयस, सी0ओ0– 07, अर्का सुर्या एवं रेड लेडी है। बीजदर 300–350 ग्राम प्रति हेक्टेयर रखें। बीज को वैविस्टन 2 ग्राम प्रति किलोग्राम की दर से उपचारित कर क्यारियों में 07–10 सेन्टीमीटर की दूरी पर बोयें।
- दुधारू पशुओं को लम्पी स्किन डिजीज (एलएसडी) से बचाने के लिए, उन्हें बकरी चेचक का टीका लगवाएँ। एलएसडी के उपचार के लिए, आइवरमेक्टिन (3.15%) का एक बार त्वचा के नीचे इंजेक्शन, स्ट्रेप्टो–पेनिसिलिन 2.5 ग्राम/2.5 ग्राम दवा तीन दिन तक, लिवोटस/ब्रूटोन/मेबोलिव दवा 50 मिलीलीटर प्रतिदिन, विटामिन एडीई 20 मिलीलीटर प्रतिदिन और खनिज मिश्रण 50 ग्राम प्रतिदिन दें। एलएसडी प्रभावित पशुओं को स्वस्थ झुंड से अलग करें।

आज का अधिकतम तापमानः 33.0 डिग्री सेल्सियस, सामान्य से 0.5 डिग्री सेल्सियस अधिक	आज का न्यूनतम तापमानः 25.0 डिग्री सेल्सियस, सामान्य से 1.8 डिग्री सेल्सियस कम

(डॉ0 ए. सत्तार)
नोडल पदाधिकारी